अटलांटिक महासागर की नितल

अटलांटिक महासागर विश्व का दूसरा बड़ा महासागर है। इसका क्षेत्रफल 8.2 करोड़ वर्ग कि० मी० है और इसकी आकृति आंग्ल भाषा के 'S' की भाँति है। यह सबसे अस्थिर महासागर है। उत्तर में डेविस स्ट्रेट से दक्षिण में अण्टार्कटिक महासागर तक तथा पश्चिम में उ० तथा द० अमेरिका एवं पूर्व में यूरोप तथा अफ्रीका के बीच स्थित है। विषुवत रेखा के समीप यह महासागर सबसे संकरा है।

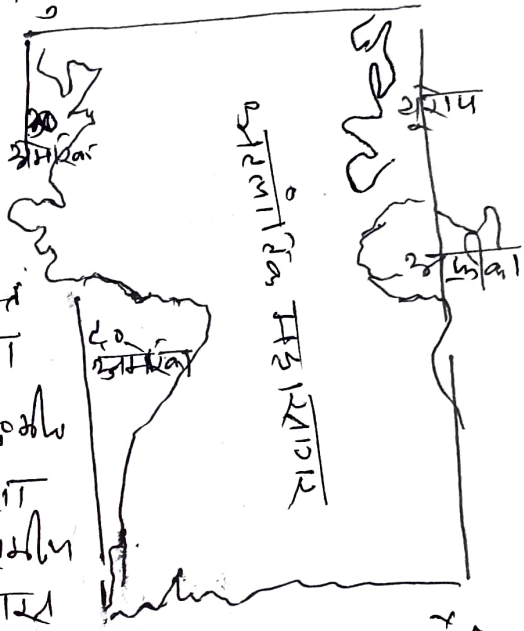

अटलांटिक महासागर की नितल को चार भागों में बांटा जा सकता है-

1) महाद्वीपीय मग्नतट — अटलांटिक महासागर के दोनों तटों पर पर्याप्त महाद्वीपीय मग्न तट का विकास हुआ है। कहीं-कहीं इसकी चौड़ाई 80 कि०मी० तक है। बिस्के की खाड़ी से उत्तमाशा अंतरीप के बीच अफ्रीका के तट के समीप संकरा है। वहीं उ०प० यूरोप के पास यह 240-400 कि०मी० तक चौड़ा है। इसी तरह न्यूफाउंडलैंड के चारों ओर विस्तृत महाद्वीपीय मग्न तट का विस्तार है। इस महासागर में निमग्न तट पर अनेक द्वीप स्थित हैं। इनमें ब्रिटिश द्वीप समूह, न्यूफाउंडलैंड, सेंट हेलना, शेटलैंड, फॉकलैंड, जार्जिया, सैंडविच, कनारी, केप वर्डे मुख्य हैं।

2) मध्य अटलांटिक कटक —

अटलांटिक महासागर में उत्तर में आइसलैंड से दक्षिण में बोवेट द्वीप तक 'S' के आकार में 14000 कि० मी० की लम्बाई में फैला है तथा कहीं-कहीं सागर तल से 4000 मीटर से नीचे नहीं आता है।

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

यद्यपि यह कटक कभी पश्चिम तो कभी पूर्व की ओर मुड़ जाता है। लेकिन इसकी स्थिति सदैव मध्यवर्ती बनी रहती है। भूमध्य रेखा के उत्तर इस कटक को डॉल्फिन और दक्षिण में इसे चैलेंजर उभार कहते हैं। आइसलैण्ड और स्कॉटलैण्ड के बीच इस कटक को विविल टामसन कटक कहते हैं। ग्रीनलैण्ड के दक्षिण में कटक चौड़ा हो जाता है उसे टेलीग्राफिक पठार कहते हैं। 50° उ० अक्षांश के पास इस कटक की शाखा न्यूफाउण्डलैण्ड उभार के नाम से अलग होकर न्यूफाउण्डलैण्ड तक चली गयी है। 40° उ० अक्षांश के द० मध्यवर्ती कटक से एक शाखा अलग होकर अजोर उभार के नाम से अजोर तट की ओर जाती है। 40 द० अक्षांश के पास इस कटक की एक शाखा वालविश कटक अफ्रीका के मगन तट की ओर तथा दूसरी शाखा रायोग्रैंडी उभार के नाम से द० अमेरिका की ओर मुड़ जाती है।

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

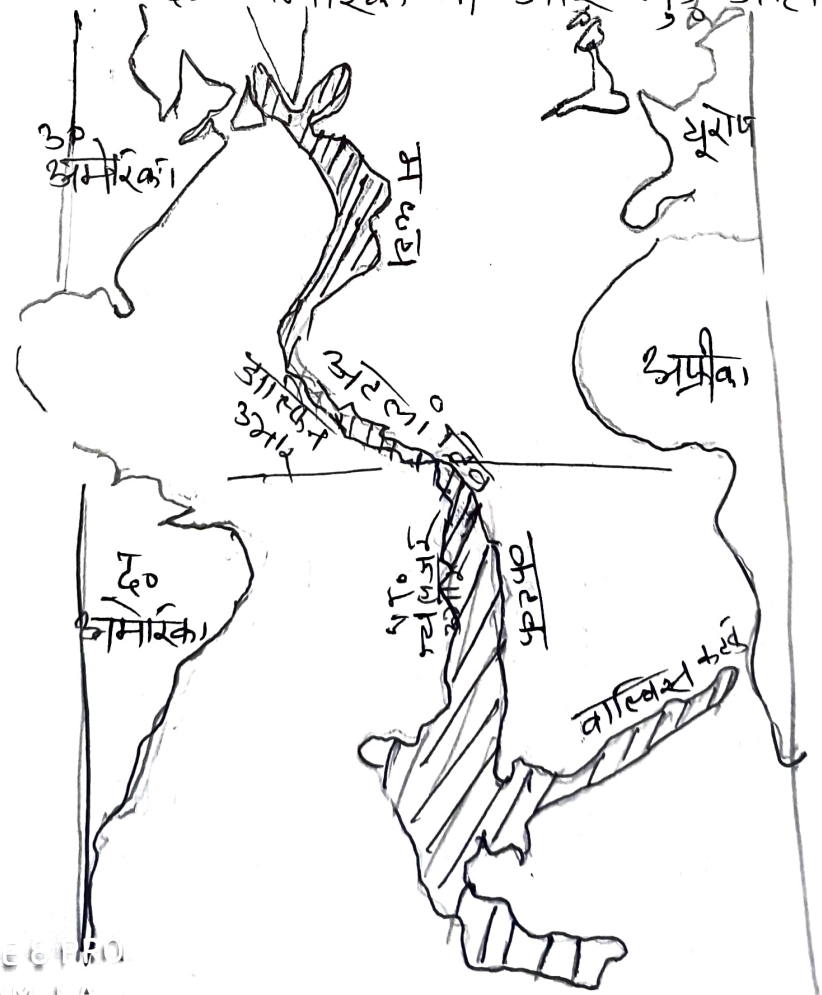

द्रोणी –

मध्यवर्ती अटलांटिक कटक द्वारा अटलांटिक महासागर दो विस्तृत द्रोणियों में विभाजित है। ये दो विस्तृत द्रोणियों में पुनः कई छोटी छोटी द्रोणियाँ पायी जाती हैं, जिनमें निम्न प्रमुख हैं –

1) लेब्राडोर द्रोणी – उ० में ग्रीनलैण्ड के जलमग्न तट तथा द० में न्यूफाउण्डलैण्ड उभार के बीच 4000 मीटर की गहराई तक 40° से 50° उ अक्षांश के बीच फैली है।

2) उ० अमेरिकी द्रोणी – अटलांटिक महासागर की सबसे बड़ी द्रोणी है। इसका विस्तार 12° से 40° उत्तरी अक्षांश के मध्य फैला है। इसकी गहराई 5000 मीटर है।

3) ब्राजील द्रोणी – द० अटलांटिक महासागर में भूमध्य रेखा से 30° द० अक्षांश तक फैला है।

4) स्पेनिश द्रोणी – मध्य अटलांटिक कटक के पूर्व में आइबेरियन प्रायद्वीप के पास स्थित स्पेनिश द्रोणी का विस्तार 30° से 50 उत्तरी अक्षांश तक लगभग 5000 मीटर की गहराई तक है।

5) उ० तथा द० कनारी बेसिन – दो वृत्ताकार द्रोणियों से मिलकर बनी है।

6) केप वर्डे द्रोणी – मध्य अटलांटिक कटक तथा अफ्रीका के मध्य 10° से 23½ उत्तरी अक्षांश के बीच 5000 मीटर की गहराई तक विस्तृत है।

इनके अलावा इस महासागर में गायना द्रोणी, अंगोला द्रोणी, केप बेसिन तथा

अंगुलाकार होती है।

गर्त - अटलांटिक महासागर में 19 महासागरीय गर्त का पता चला है। मेर महोदय के अनुसार इनकी गहराई 3000 फैदम से अधिक है। प्रमुख गर्तों में नेरस, पोर्टोरिको, रोमांश, वाल्डीविया, बुकानन, मोसले, चुन आदि गर्त हैं।